

वशिष्णुपद और महाबोधमंदिर के लिये कॉरडोर परियोजनाएँ

चर्चा में क्यों?

हाल ही में केंद्रीय बजट 2024-25 में बिहार के [गया में वशिष्णुपद मंदिर](#) और बोधगया में [महाबोधमंदिर](#) के लिये कॉरडोर परियोजनाओं को वकिसति करने की योजना प्रस्तुत की गई।

प्रमुख बडि

■ गया में वशिष्णुपद मंदिर

- **स्थान:** यह भारत के बिहार के गया ज़िले में फलगु नदी के तट पर स्थित है।
- **मुख्य देवता:** यह मंदिर **भगवान वशिष्णु को समर्पित है।**
- **कविदंती:** स्थानीय पौराणिक कथाओं के अनुसार, गयासुर नामक एक राक्षस ने देवताओं से दूसरों को मोक्ष (पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति) प्राप्त करने में मदद करने की शक्ति देने का अनुरोध किया था। हालाँकि इस शक्ति का दुरुपयोग करने के बाद भगवान वशिष्णु ने उसे वश में कर लिया और मंदिर में एक पदचिह्न छोड़ दिया, जिसे उस घटना का प्रतीक माना जाता है।
- **वास्तुकला संबंधी विशेषताएँ:** मंदिर लगभग 100 फीट ऊँचा है और इसमें 44 स्तंभ हैं, जो **वशिशाल ग्रे ग्रेनाइट ब्लॉक** (मुंगेर काले पत्थर) से बने हैं तथा **लोहे की पट्टियों से जुड़े हुए हैं**।
- **अष्टकोणीय मंदिर** पूरव दशिया की ओर उन्मुख है।
- **नरिमाण:** इसका नरिमाण वर्ष **1787 में रानी अहलियाबाई होलकर** के आदेश के तहत किया गया था।
- **सांस्कृतिक प्रथाएँ:** यह मंदिर **पति पक्ष** के दौरान वशिष्णु रूप से महत्त्वपूर्ण होता है, जो पूरवजों को सम्मानित करने के लिये समर्पित अवधि है तथा बड़ी संख्या में भक्तों को आकर्षित करता है।
 - ब्रह्म **कल्पति ब्राह्मण**, जनिहें गयावाल ब्राह्मण भी कहा जाता है, प्राचीन काल से मंदिर के पारंपरिक पुजारी रहे हैं।

■ बोधगया में महाबोधमंदिर

- **स्थान:** बोधगया, बिहार के गया ज़िले में।
- **ऐतहासिक महत्त्व:** ऐसा माना जाता है कि यह वह **स्थान है, जहाँ गौतम बुद्ध को महाबोध वृक्ष के नीचे ज्ञान की प्राप्ति हुई थी।**
- **नरिमाणकर्ता:** मूल मंदिर का नरिमाण **सम्राट अशोक** ने तीसरी शताब्दी ईसा पूरव में करवाया था, जबकि वर्तमान संरचना **5वीं - 6वीं शताब्दी की है।**
- **स्थापत्य विशेषताएँ:** इसमें **50 मीटर ऊँचा भव्य मंदिर**, वज्रासन, पवतिर **बोध वृक्ष** और बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति के अन्य छह पवतिर स्थल शामिल हैं, जो कई प्राचीन स्तूपों से घिरे हैं तथा आंतरिक, मध्य एवं बाहरी गोलाकार सीमाओं द्वारा अच्छी तरह से अनुरक्षित व संरक्षित हैं।
- **यह गुप्त काल** के सबसे पुरांभिक **ईट मंदिरों में से एक है**, जसिने बाद की ईट वास्तुकला को प्रभावित किया है।
- वज्रासन (**हीरा सहिसन**) मूलतः **सम्राट अशोक द्वारा** उस स्थान को चिह्नित करने के लिये स्थापित किया गया था जहाँ बुद्ध ध्यान साधना करते थे।

■ महाबोधमंदिर के पवतिर भाग:

- **बोध वृक्ष:** ऐसा माना जाता है कि यह उस वृक्ष का प्रत्यक्ष वंशज है, जसिके नीचे बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई थी।
- **अनमिषलोचन चैत्य:** जहाँ बुद्ध ने दूसरा सप्ताह बताया था।
- **रत्नचक्रमा:** बुद्ध के तीसरे सप्ताह के चलति ध्यान (walking meditation) का स्थल।
- **रत्नाघर चैत्य:** बुद्ध के चौथे सप्ताह का स्थल।
- **अजपाल नगिरोध वृक्ष:** बुद्ध के पाँचवें सप्ताह का स्थल।
- **लोटस पॉण्ड:** बुद्ध के छठे सप्ताह का स्थल।
- **राजयतन वृक्ष:** बुद्ध के सातवें सप्ताह का स्थल।

■ मान्यता: महाबोधमंदिर वर्ष 2002 से **यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल है।**

- **तीर्थ स्थल:** महाबोधमंदिर बड़ी संख्या में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है, जो इसके आध्यात्मिक महत्त्व को दर्शाता है।

